

म. dass. Ragh. 2, 31. Kumāras. 3, 42. — Vgl. चित्रग, चित्रगत, चित्रन्यस्त, चित्रस्थ und u. चित्र 4, g.

चित्रावसु (चित्र + वसु) adj. an funkelndem Schmuck reich, von der Nacht VS. 3, 18. Çat. Br. 2, 3, 4, 22; vgl. चित्र und चित्रवर्कम्.

चित्राश्व (चित्र + अश्व) m. Bein. Satjavant's Sāv. 2, 13, wo auch der Ursprung des Namens erklärt wird.

चित्रिका (von चित्रा *spica virginis*) m. = चैत्रिक der Monat Kaitra Çandrar. im ÇKDr.

चित्रित s. u. चित्र् und vgl. विचित्रित.

चित्रिन् (von चित्र) 1) adj. a) Wunder enthaltend. — b) gesprenkelte (d. h. schwarze und graue) Haare habend Varāh. Brh. S. 76, 10. — 2) f. a) pl. wundervolle Werke (चित्रकर्मपुक्त Śā.): भूमिश्चिद्वाप्सितूतुजिरा चित्रं चित्रिणीषा । चित्रं कृपाप्युतये RV. 4, 32, 2. — b) ein Frauenzimmer mit bestimmten Eigenschaften: पद्मिन्यादिचतुर्विधस्त्रीमध्यो स्त्रीविशेषः । सा मीनगन्धा । तस्या लक्षणं यथा । भवति रतिरसज्ञा नातिदीर्घा न खर्वा तिलकुसुममुनासा स्निग्धदेहेत्पल्ला । कठिनघनकुचाद्या मुन्दरी सा मुशोला सकलगुणविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्त्रा ॥ इति रतिमञ्जरी ॥ ÇKDr. Verz. d. B. H. No. 593.

चित्रिय 1) adj. viell. bunt, von einer Art des Açvattha gesagt: चित्रिपस्याश्चत्थस्यार्धाति (समिधः) TBa. 1, 1, 9, 5. 2, 4, 7. Vgl. चित्र्य. — 2) m. N. pr. eines Mannes Rāga-Tar. 8, 2184.

चित्रीकर (चित्र + 1. कर) 1) sich verwundern, s. d. folg. Wort. — 2) zum Bilde machen, in ein Bild verwandeln: चित्रीकृत Çāk. 148.

चित्रीकरणा (von चित्रीकर) n. Verwunderung P. 3, 3, 180.

चित्रीकार m. dass. Vjutr. 176.

चित्रिप् (von चित्र), चित्रियते P. 3, 1, 19. = आश्चर्य Vārt. 3. 1) in Staunen gerathen Siddh. K. धीर्न चित्रियते कस्माद्भित्ति चित्रकर्मणा Kāthās. 6, 50. Mahāvīraś. 84, 10. — 2) zum Wunder werden für Jmd (gedr.), Staunen verursachen Siddh. K. Vop. 21, 13. चित्रियते धनोदयाः Bhāṭṭ. 18, 23. (रामः) अचित्रियतास्त्रिभिः 17, 64. चित्रियमाण 5, 48. सद्यः संगतानां च सैनिकानां तदत्यचित्रियताकारात्तर्यरूपम् Daçak. 177, 13.

चित्रेश (चित्रा *spica virginis* + ईश) m. der Mond Çandrar. im ÇKDr.

चित्रोक्ति (चित्र + उक्ति) f. eine seltsame Stimme, eine Stimme vom Himmel Trik. 2, 8, 26 (die gedr. Ausg. चितोक्ति). Hān. 220.

चित्रैति (चित्र + उति) adj. der ausgezeichnete Liebeserweisungen, Freuden hat oder giebt RV. 10, 140, 3.

चित्रोपला (चित्र + उपल) f. N. pr. eines Flusses MBh. 6, 341. VP. 184.

चित्रोदन (चित्र + ओदन) n. = चित्राग्र Grahajagñatattva im ÇKDr.

चित्र्य (von चित्र) adj. funkelnd: सूर्यमा धृत्यो दिवि चित्र्यं रथम् RV. 5, 63, 7. आ चित्रं चित्र्यं भरा रथि नैः 7, 20, 7. — Vgl. चित्रिय.

चिद् enklit. Part. Im Padap. vom vorangehenden Worte getrennt. Nā. 1, 4, 8, 5. 1) dient zur Hervorhebung, Verstärkung, Erweiterung oder Einschränkung (mit einer Neg.): sogar, selbst, auch; wenigstens; mit einer Neg. nicht einmal. Oft nur durch den Ton auszudrücken. देवाश्चित्ति यज्ञियं भगामीनप्रः RV. 2, 23, 2. 10, 3. अमर्त्यं चिद्वासे मन्यमानम् 11, 2, 7. 12, 8. समौ चिद्वास्तौ न समं विविष्टः समातरौ चिन् समं डुरुते 10, 117, 9. एकस्य चिन्मे 1, 163, 10. VS. 27, 8. Nach पुरा RV. 1, 127, 3. 2, 30, 4. 4, 31, 8. भूरि 1, 183, 9. अत्रो 187, 7. इति 5, 41, 17. अस्ति 8, 11, 4.

II. Theil.

आरातात् 1, 167, 9. हरे AV. 3, 3, 2. त्वम् RV. 5, 20, 1. वयम् 1, 180, 7. ये चित्ते चित् 179, 2. Zuweilen versetzt: मा चिदन्यदि शंसते für अन्यच्चित् RV. 8, 1, 1. मूढा नो अग्निं चिदधातु 10, 25, 3. Nach den Conj. यद्, यथा wenn ja, wie ja: यच्चिद्दि शश्वतामसीन्द्र साधारणास्त्वम् । तं वा वयं देवामहे RV. 4, 32, 12. यच्चिद्दि वा पुर शर्षयो जुहोरे ज्वसे 8, 8, 6. 45, 19. यथा चित्रो अर्बोधयः सत्यम्रवसि 5, 79, 1. यथा चिन्मन्यसे कदा तदिन्मे जग्मु-राशंसः 56, 2. 8, 5, 25. 37. 37, 10. Ein vorangehendes verbum fin. orthotonirt P. 8, 1, 57. देवः पचति चित् Sch. Sehr häufig nach den fragenden pronomm. und adv. क, कतम्, कतर, कद्, किम्, कथम्, कदा, कुतम्, कः; s. unter diesen Wörtern. Nach einem am Anfange des Satzes stehenden interrog. mit folgendem चिद् behält ein verbum fin. seinen Ton nach P. 8, 1, 48. Selten tritt zwischen interrog. und चिद् noch ein anderes Wort ein, z. B. Bhāg. 5, 13, 10: कर्हि स्म चित्. In der klass. Sprache ist चिद् ausser nach interrog. nur noch nach ज्ञातु (s. d.) anzutreffen. — 2) चिद् — चिद्, चिद् — च, चिद् — उ sowohl — als auch: उते वयश्चिद्वसतेरपतन्त्रश्च RV. 1, 124, 12. आधश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिदाज्ञा चिद्यं भगं भूतीत्यार्क 7, 41, 2. आपश्चिदस्य व्रतं आ निमृधा अयं चिदितो रमते परिभन् 2, 38, 2. पाक्वा चिद्वसो धीर्या चिद्युष्मानीतो अयं यो-तिरिष्याम् 27, 11. 3, 7, 10. इदा चिदक्क इदा चिदक्कोः 4, 10, 5. सो चिन् मेरा-ति नो वयं मेराम 1, 191, 10. 2, 12, 13. — 3) zur Vergleichung: wie: दधि चिदित्युपमार्थे Nā. 1, 4. चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने (ist die Endsilbe des Satzes unbetont und pluta) P. 8, 2, 101. अग्निचिदवापश्च, राजचिदवापश्च Sch. In diesen Beispielen schliesst sich चिद् wie ein Suffix (!) an den Stamm des Nomens an. — Vgl. च und इद्.

चिदम्बर (5. चित् + अम्बर) m. N. pr. eines Verfassers eines Gesetzbuches Ind. St. 1, 246, N.

चिदस्थिमाला (5. चित् + अस्थि + माला) f. Titel eines grammatischen Commentars Colebr. Misc. Ess. II, 41.

चिदात्मन् (5. चित् + आत्मन्) m. der denkende Geist, die reine Intelligenz Bhāg. P. 1, 3, 30. Prāb. 114, 19. सत्यानन्दचिदात्मता 13.

चिदुल्लास (5. चित् + उल्लास) adj. den Geist —, das Herz erfreuend: मुक्ताफलैः Bhāg. P. 9, 11, 33.

चिद्रूप (5. चित् + रूप) P. 8, 2, 39, Sch. Vop. 2, 37. adj. 1) aus Intelligenz bestehend, ganz Intelligenz seiend (= ज्ञानमय): चिद्रूपे परमात्मनि Jogaç. im ÇKDr. Nach Wils. n.: the Supreme Being, as identifiable with intellect or understanding. — b) gutherzig, = स्फूर्तिमत् Trik. 3, 1, 23. = कृदयालु, सद्दय H. 345.

चित्, चित्तयति (nach Einigen auch चित्तति, welches aber nicht zu belegen ist) Dhātup. 32, 2; in gebundener Rede sehr häufig auch med., चित्तयान auch in der Prosa Pañkat. 209, 6. चित्त्य gerund. MBh. 3, 14111. Benf. Chr. 38, 1. Hariv. 10209. 1) bei sich denken, einen bestimmten Gedanken haben; nachdenken, nachsinnen: न सनामोति चित्तयन् MBh. 1, 1053. द्वितीयमिदमाश्चर्यमित्यचित्तयत 3, 13745. त्राणं सौम्यं न जीवेयं विना तामिति चित्तये R. 5, 67, 10. Pañkat. 1, 14. 209, 6. पश्यामि तावत्को कृत्ति नरानत्रेति चित्तयन् Vid. 211. तावच्चैरेण दृष्टा चित्तितं च । एषा साभरणा कुत्र गच्छति Var. 25, 5. 29, 2. 33, 11. निर्ममे योषितं दिव्यं चित्तयित्वा पुनः पुनः MBh. 1, 7690. तस्य चित्तयतो बुद्धिरुत्पन्नेयम् R. 1, 8, 2. चित्तयामास को न्वेतल्लोके ऽस्मिन्प्रथयेदिति 4, 1. चित्तय तावत् केनापदेशेन